हफ़्तावार रिसाला : 452
Weekly Booklet : 452

तह़रीराते अ़त्तार

(अराकीने मर्कज़ी मजलिसे शूरा के नाम)

WRITINGS OF ATTAR

(for the members of Central Executive Committee)

तह़रीराते अ़त्तार (अराकीने मर्कज़ी मजलिसे शूरा के नाम)

पहले इसे पढ़ें

अल्लाह पाक की रह़मत और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ाने करम से इ़श्क़े रसूल के जाम भर भर के पिलाने वाली, सह़ाबा व अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का अदबो एह़तिराम सिखाने वाली, न सिर्फ़ नेकियों का रास्ता बताने वाली बल्कि राहे सुन्नत पर चलाने वाली, औलियाए किराम की मह़ब्बत दिलों में बढ़ाने वाली, आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नतों भरी दीनी तन्ज़ीम "**दावते इस्लामी**" 1981 को मारिज़े वुजूद में आई।

बानिये दावते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शुरूअ़ शुरूअ़ में चन्द इस्लामी भाइयों के साथ मिल कर नेकी की दावत आ़म करने के जज़्बे से सरशार हो कर गली गली, मह़ल्ले मह़ल्ले, क़र्या क़र्या और फिर शहर शहर सफ़र करते और सुन्नते मुस्त़फ़ा का पैग़ाम आ़म करते :

मैं अकेला ही चला था जानिबे मन्ज़िल मगर   लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दीने मतीन की ख़िदमत और क़ुरआनो सुन्नत के फ़ैज़ान को आ़म करने का 1981 से शुरूअ़ होने वाला सिल्सिला शबो रोज़ जारी है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दूर अन्देशी पर लाखों सलाम, आप ने कई ह़िक्मतों और मस्लह़तों के पेशे नज़र सितम्बर 2000 ईसवी में अपने ख़ून पसीने से सींची हुई चहीती दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी की "**मर्कज़ी मजलिसे शूरा**" क़ाइम फ़रमाई, इस के सब से पहले निगरान, मश्हूरे ज़माना नात ख़्वां, बुलबुले

मदीना अलह़ाज मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी क़ादिरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ बनाए और इन के बाद निगराने शूरा का इन्तिख़ाब मर्कज़ी मजलिसे शूरा पर रखा। उस वक़्त मर्कज़ी मजलिसे शूरा 11 अफ़राद पर मुश्तमिल थी, अब तक निगराने शूरा समेत इन की तादाद 29 है।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने राक़िमुल ह़ुरूफ़ अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्तारी عُفِیَ عَنۡہُ की अ़र्ज़ पर तक़रीबन तीन साल पहले 2022 के सफ़रे मदीना में मर्कज़ी मजलिसे शूरा के चन्द अराकीन के नाम मुख़्तलिफ़ मदनी फूल अपने क़लम से तह़रीर फ़रमाए और फिर बाद में सब अराकीने शूरा के नाम तह़रीरात के इस सिल्सिले को मुकम्मल फ़रमाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! येह रिसाला बनाम "**तह़रीराते अ़त्तार**" (अराकीने मर्कज़ी मजलिसे शूरा के नाम)" इन तमाम तह़रीरात का मज्मूआ़ है।

अल्लाह करीम अमीरे अहले सुन्नत का साया ख़ैर व आ़फ़ियत के साथ दराज़ फ़रमाए और हमें आप की बनाई हुई मर्कज़ी मजलिसे शूरा की शरीअ़त के दायरे में इत़ाअ़त करते हुए दावते इस्लामी का दीनी काम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیِّن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

त़ालिबे दुआ़ए ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व बे ह़िसाब मग़्फ़िरत

अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्तारी मदनी عُفِیَ عَنۡہُ

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 34 सफ़ह़ात का रिसाला "तह़रीराते अ़त्तार (अराकीने मर्कज़ी मजलिसे शूरा के नाम)" पढ़ या सुन ले उसे दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा और उसे मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیِّن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

یادِ سفرِ مدینہ

دعوتِ اسلامی زندہ باد (آمین)

(یعنی دعوتِ اسلامی سلامت رہے ۔ آمین)

دعائے عطار: یا اللہ پاک! جو کوئی اپنے گھر، دکان، دفتر، گاڑی وغیرہ پر "دعوتِ اسلامی زندہ باد" لکھے اُس کو دنیا و آخرت میں سلامت رکھ اور اُس کی ماں باپ سمیت بے حساب مغفرت فرما۔

(حاجی عمران نگرانِ شوریٰ کیلئے تحفہ) آمین بجاہ خاتم النبیین صلی اللہ علیہ والہ وسلم

दुआए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई अपने घर, दुकान, दफ़्तर, गाड़ी वग़ैरा पर "दावते इस्लामी ज़िन्दाबाद" लिखे उस को दुनिया व आख़िरत में सलामत रख और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمین بِجَاہِ خاتمِ النبیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(हाजी इमरान निगराने शूरा के लिये तोहफ़ा)

LONG LIVE DAWAT E ISLAMI

Attar's Prayer: O Allah! Whoever writes "Long live Dawat-e-Islami" on their home, shop, office, vehicle, etc., keep them safe in this world and the Hereafter, and grant them and their parents forgiveness without accountability. اٰمِیْن بِجَاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علَیْہِ واٰلِہٖ وسلَّم

(A gift for Haji Imran, Head of Dawat-e-Islami's Central Executive Committee)

یادِ سفرِ مدینہ

حیا کی اہمیت

حدیثِ قُدسی میں فرمانِ الٰہی: "اے آدمی تیرا دین اُس وقت تک دُرُست نہیں ہوسکتا جب تک تیری زبان سیدھی نہ ہو اور تیری زبان تب تک سیدھی نہیں ہوسکتی جب تک تُو اپنے ربّ عزوجل سے حیا نہ کرے۔"

صلّوا علی الحبیب صلّی اللہ علیٰ محمّد

الحمدللہ ہمارا ہوائی جہاز سوئے جدّہ شریف محوِ پرواز (یعنی اُڑ رہا) ہے۔

حاجی محمد شاہد عطاری کی خدمت میں سوغات

ह़या की अहमिय्यत

ह़दीसे क़ुदसी में फ़रमाने इलाही : "ऐ आदमी तेरा दीन उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं हो सकता जब तक तेरी ज़बान सीधी न हो और तेरी ज़बान तब तक सीधी नहीं हो सकती जब तक तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ह़या न करे।"

(रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 13 ता 14) (नसीह़तों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल, स. 29)

(ह़ाजी मुह़म्मद शाहिद अ़त्तारी की ख़िदमत में सौग़ात)

THE IMPORTANCE OF MODESTY

In a Hadith Qudsī, Allah Almighty states: "O son of Ādam! Your religion cannot be correct until your tongue is upright, and your tongue cannot be upright until you have modesty before your Lord."[1]

(A gift for Haji Muhammad Shahid Attari)

[1] Rafiq-ul-Haramayn, pp. 13-14

یادِ حاضریِ مدینہ

عرش و کرسی سے بھی افضل

(قبرِ انور میں) اللہ پاک کے سب سے آخری نبی صلی اللہُ علیہ والہ وسلم کے جسمِ مبارک سے زمین کا جو حصّہ لگا ہوا ہے وہ کعبہ شریف سے بلکہ عرش و کُرسی سے بھی افضل ہے۔

عرشِ مُعلیٰ سے اعلیٰ پیارے نبی کا روضہ
ہے ہر مکاں سے بالا پیارے نبی کا روضہ[1]

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہُ علیٰ محمّد

[1] روضہ یعنی باغ۔ شعر میں روضہ سے مُراد وہ جگہ ہے جہاں جسمِ اقدس تشریف فرما ہے۔

(الحمدُ للہِ الکریم اس بار کی حاضریِ مدینہ کی آج پہلی شب ہے۔ (یہ تحریر حاجی عبد الحبیب عطاری کیلئے تحفہ ہے)

अ़र्श व कुर्सी से भी अफ़्ज़ल

(क़ब्रे अन्वर में) अल्लाह पाक के सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुबारक से ज़मीन का जो ह़िस्सा लगा हुवा है वोह काबा शरीफ़ से बल्कि अ़र्श व कुर्सी से भी अफ़्ज़ल है। (در مختار، 4/62)

(येह तह़रीर ह़ाजी अ़ब्दुल ह़बीब अ़त्तारी के लिये तोह़फ़ा है)

SUPERIOR EVEN TO THE ARSH AND KURSI

(The illuminated grave,) the part of the earth that touches the blessed body of the final Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, is superior to the Kaʿba, and even more virtuous than the Divine Throne.[1]

(This writing is a gift for Haji Abdul Habib Attari)

[1] Durr-e-Mukhtar, vol. 4, p. 62

غصّے پر قابو پانے کی فضیلت

یادِ سفرِ مدینہ

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ والہٖ وسلّم :

”جو شخص اپنے غصّے کو روکے گا اللہ پاک قیامت
کے روز اُس سے اپنا عذاب روک دے گا۔“

الحمدللہ الکریم یہ الفاظ لکھتے وقت ہمارا ہوائی جہاز عرب شریف کی فضاؤں میں
جھومتا ہوا سوئے جدّہ شریف رواں دواں ہے۔ ؎

لو آیا کہ اب آیا جدّہ کا ساحل
اب آئے گا مکّہ، چلیں گے مدینہ

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمّد

(حاجی محمد امین عطاری کی خدمت میں سفرِ مدینہ کی یادگار سوغات)

ग़ुस्से पर क़ाबू पाने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : “जो शख़्स अपने ग़ुस्से को रोकेगा अल्लाह पाक क़ियामत के रोज़ उस से अपना अ़ज़ाब रोक देगा।” (شعب الایمان،6/315،حدیث:8311)

(हाजी मुहम्मद अमीन अ़त्तारी की ख़िदमत में सफ़रे मदीना की यादगार सौग़ात)

THE EXCELLENCE OF CONTROLLING ANGER

The final Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم said: “Whoever restrains his anger, Allah Almighty will withhold His punishment from him on the Day of Judgement.”[1]

(A souvenir of the journey to Madinah for Haji Muhammad Amin Attari)

[1] Shu’ab al-Iman, vol. 6, p. 315, Hadith 8311

قوّتِ حافظہ کے لئے پیارا عمل

بعد نمازِ عشا تین بادام لیکر دُرودِ پاک پڑھتے پڑھتے
پانی میں بِھگو دیجئے، فجر کی نماز کے بعد اور اگر روزہ
رکھنا ہو تو سحری کے وقت دُرود شریف پڑھتے پڑھتے پانی سے نکال کر چھلکا
اتار کر تینوں بادام پر یَا عَلِیْمُ یَا قَوِیُّ ۱۰۰ بار پڑھ کر دم کر کے کھا لیجئے۔
بچّوں کیلئے یہ عمل کرکے اُن کو بھی کھلا سکتے ہیں۔ یہ عمل جتنے دن چاہیں کر سکتے ہیں،
روزانہ کا معمول بھی بنا سکتے ہیں، اِن شآءَ اللہُ الکریم یادداشت کافی مضبوط ہو جائے گی۔

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علیٰ محمّد

(الحاج قاری ایاز عطاری (رکنِ شوریٰ)
کی خدمت میں سوغات)

क़ुव्वते हाफ़िज़ा के लिये प्यारा अ़मल

बाद नमाज़े इशा तीन बादाम ले कर दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते पानी में भिगो दीजिये, फ़ज्र की नमाज़ के बाद और अगर रोज़ा रखना हो तो सेहरी के वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ते पढ़ते पानी से निकाल कर छिल्का उतार कर तीनों बादाम पर يَاعَلِيْمُ يَاقَوِيُّ 100 बार पढ़ कर दम कर के खा लीजिये। बच्चों के लिये येह अ़मल कर के उन को भी खिला सकते हैं। येह अ़मल जितने दिन चाहें कर सकते हैं, रोज़ाना का मामूल भी बना सकते हैं, اِن شآءَاللهُ الكريم याद दाश्त काफ़ी मज़बूत हो जाएगी।

(अलहाज क़ारी अयाज़ अ़त्तारी (रुक्ने शूरा) की ख़िदमत में सौग़ात)

A BEAUTIFUL PRACTICE FOR STRENGTHENING MEMORY

After the 'Ishā' prayer, take 3 almonds and soak them in water while reciting Ṣalāt. After the Fajr prayer (or at the time of suhoor if you are fasting), remove them from the water while reciting Ṣalāt, peel them, recite يَاعَلِيْمُ يَاقَوِيُّ 100 times, blow upon them, and then eat them. This practice may also be done for children and given to them to eat. It may be continued for as many days as you like; you can even make it a daily routine. اِن شآءَاللهُ الكريم, Your memory will become very strong.

(A gift for Al-Ḥāj Qārī Ayaz Attari, Shura member)

تحریر جل (جدہ شریف)

یادِ سفرِ مدینہ

میرے لئے سب سے اچھا تحفہ ہے: "سلام"

صحابیِ نبی حضرت ابو دَردا رضی اللہ فرماتے ہیں: "مجھے میرے کسی مسلمان بھائی نے ایسا تحفہ نہیں دیا جو سلام سے زیادہ مجھے پسند ہو۔"

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علٰی محمّد

حاجی محمد اسلم عطاری (رکنِ شوریٰ) کی خدمت میں تحریری سوغات

मेरे लिये सब से अच्छा तोह़फ़ा है : "सलाम"

सह़ाबिये नबी ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "मुझे मेरे किसी मुसलमान भाई ने ऐसा तोह़फ़ा नहीं दिया जो सलाम से ज़ियादा मुझे पसन्द हो।" (الزہد لامام احمد، ص164، حدیث:755)

ह़ाजी मुह़म्मद अस्लम अ़त्तारी (रुक्ने शूरा) की ख़िदमत में तह़रीरी सौग़ात

THE BEST GIFT FOR ME IS: "SALĀM"

The companion of the Prophet, Sayyidunā Abū Dardā رَضِیَ اللہُ عَنْہُ, said: "No Muslim brother has given me a gift that I liked more than *Salām*."[1]

(A written gift for Haji Muhammad Aslam Attari (Shura member)

[1] Al-Zuhd lil Imam Ahmad bin Hanbal, p. 164, Hadith 755

مُحتاجی سے بچنے کا وظیفہ

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْمَلِکُ الْحَقُّ الْمُبِیْن 100 بار جس نے روزانہ پڑھا وہ دنیا میں مُحتاجی سے بچے گا، اُسے قبر میں گھبراہٹ نہ ہوگی اور اُس کیلئے جنّت کے دروازے کھول دیئے جائیں گے۔

(رُکنِ شوریٰ حاجی رفیع العطاری کی خدمت میں سوغات)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب
صَلَّی اللہُ علیٰ محمّد

मोह़ताजी से बचने का वज़ीफ़ा

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْن 100 बार जिस ने रोज़ाना पढ़ा वोह दुनिया में मोह़ताजी से बचेगा, उसे क़ब्र में घबराहट न होगी और उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाएंगे। (शर्हुस्सुदूर, स. 158)

(रुक्ने शूरा ह़ाजी रफ़ीउ़ल अ़त्तारी की ख़िदमत में सौग़ात)

LITANY TO AVOID POVERTY

The final Prophet صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم said: “Whoever recites لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْن 100 times daily will be saved from poverty in the world, have no fear in the grave, and the gates of Paradise will be opened for him.”[1]

(A gift for Shura Member Haji Rafi Attari)

[1] Sharh-us-Sudoor (Urdu), p. 158

آہ! فراقِ مدینہ

میں مدینہ چھوڑ آیا

چھپ گیا نگاہوں سے، آہ! سب مدینے کا
دلکش و حسیں منظر، میں مدینہ چھوڑ آیا

دور ہو گیا سرکار! آہ! غمزدہ عطار
جلد آؤں پھر در پر، میں مدینہ چھوڑ آیا

(رکنِ شوریٰ حاجی یعفور رضا عطاری کی خدمت میں غمِ مدینہ میں ڈوبی ہوئی تحریر کی سوغات۔۔۔

یہ الفاظ اگرچہ مدینۂ پاک میں نہیں لکھے، تاہم جس کاغذ پر لکھے ہیں وہ مدینے سے ہو کر آ رہے ہیں)۔

صلوا علی الحبیب صلی اللہ علی محمد

मैं मदीना छोड़ आया

छुप गया निगाहों से, आह ! सब मदीने का
दिलकश व ह़सीं मन्ज़र, मैं मदीना छोड़ आया

दूर हो गया सरकार ! आह ! ग़मज़दा अ़त्तार
जल्द आऊं फिर दर पर, मैं मदीना छोड़ आया

(रुक्ने शूरा ह़ाजी याफ़ूर रज़ा अ़त्तारी की ख़िदमत में ग़मे मदीना में डूबी हुई तह़रीर की सौग़ात)

(A written gift immersed in the sorrow of Madinah for Shura member Haji Yafoor Raza Attari)

آہ! فرقتِ مدینہ

آہ! میں مدینہ چھوڑ آیا

دوسروں کے عیب مت ڈھونڈو

مسلمانوں کے دوسرے خلیفہ حضرت عمر فاروقِ اعظم رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں: ”دوسروں کے عیب ڈھونڈنے سے بچنے والے کو اپنے عیبوں کی اصلاح کی توفیق ملتی ہے۔“

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب
صلَّی اللہُ علیٰ محمّد

مکّے کی حسین شام کی دیکھوں میں بہاریں
پھر دیکھوں مدینے کی شہا! صُبحِ دل آرا

(حاجی وَقارالمدینہ کی خدمت میں سوغات)

दूसरों के ऐ़ब मत ढूंडो

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : “दूसरों के ऐ़ब ढूंडने से बचने वाले को अपने ऐ़बों की इस्लाह़ की तौफ़ीक़ मिलती है।” (المنبّھات، ص90)

(हाजी वक़ारुल मदीना की ख़िदमत में सौग़ात)

DO NOT FIND FAULTS IN OTHERS

The second Caliph of Islam, Sayyidunā ʿUmar b. al-Khaṭṭāb رَضِیَ اللہُ عَنْہ, said: “The one who avoids searching for faults in others is granted the ability to reform his own faults.”[1]

(A gift for Haji Waqar al-Madinah)

[1] Al-Munabbihat, p. 90

ہائے! مدینہ چھوٹ گیا

آہ! فراقِ مدینہ

بات کا قیدی

کہا جاتا ہے: ”بات انسان کی قید میں ہوتی ہے جبکہ
بولنے کے بعد اِنسان اُس کا قیدی بن جاتا ہے۔“

ہو غمِ مصطفےٰ عطا یارب!
درد بڑھتا رہے مدینے کا

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللّٰہُ علی محمّد

(رکنِ شوریٰ حاجی اطہر علی عطاری کی خدمت میں سوغات)

बात का क़ैदी

कहा जाता है : “बात इन्सान की क़ैद में होती है जब कि बोलने के बाद इन्सान उस का क़ैदी बन जाता है।” (المستطرف،1/147)

(रुक्ने शूरा हाजी अत़हर अ़ली अ़त्तारी की ख़िदमत में सौग़ात)

PRISONER OF ONE’S WORDS

“It is said: A statement is a person’s prisoner,
but once spoken, the person becomes its prisoner.”[1]

(A gift for Shura member Haji Athar Ali Attari)

[1] Al-Mustatraf, vol. 1, p. 147

آہ! ہجرِ مدینہ

آہ! میں مدینہ چھوڑ آیا

ایک آسان کام

فرمانِ آخری نبی صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم:

”جب کوئی شخص اپنے گھر سے نکلتے وقت بسم اللہ پڑھتا ہے

تو فرشتہ کہتا ہے: تیری ذِمّہ داری لے لی گئی۔“

صلّوا علی الحبیب — تیری گلیوں سے بچھڑ کر بھی ہے کوئی زندگی

صلَّی اللہُ علیٰ محمّد — دور رہ کر ہائے مرنا ہائے جینا الوداع

(حاجی محمد امین قافلہ کی خدمت میں سوغات)

एक आसान काम

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : “जब कोई शख़्स अपने घर से निकलते वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ता है तो फ़रिश्ता कहता है : तेरी ज़िम्मेदारी ले ली गई।”

(حلیۃ الاولیاء، 7/299، حدیث:10592)

(हाजी मुहम्मद अमीन क़ाफ़िला की ख़िदमत में सौग़ात)

AN EASY DEED

The final Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم said: “When a person says بِسۡمِ الله while leaving his home, an angel says: ‘Your responsibility has been taken care of.’”[1]

(A gift for Haji Muhammad Amin Qafila)

[1] Hilyat al-Awliya`, vol. 7, p. 299, Number 10592

دل روشن ہونے کی نشانی

بعض عارفین کا قول ہے: مسکراہٹ اور خندہ پیشانی دل کے روشن ہونے کی نشانی ہے۔

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علی محمد

الحاج قاری محمد سلیم عطاری (رکنِ شوریٰ) کی خدمت میں انمول سوغات۔

दिल रौशन होने की निशानी

बाज़ आरिफ़ीन का क़ौल है : मुस्कुराहट और ख़न्दा पेशानी दिल के रौशन होने की निशानी है। (فیض القدیر، 3/297، تحت الحدیث:3231)

अलहाज क़ारी मुहम्मद सलीम अत्तारी (रुक्ने शूरा) की ख़िदमत में अनमोल सौग़ात।

SIGN OF AN ILLUMINATED HEART

Some Gnostics say: "Smiling and a cheerful expression are signs of an illuminated heart."[1]

(A priceless gift for Al-Ḥāj Qārī Muhammad Saleem Attari, Shura member)

[1] Fayd-ul-Qadeer, vol. 3, p. 297, under Hadith 3231

یادِ سفرِ مدینہ
تحریر: امارات تا جدہ شریف
(دورانِ پرواز)

मज़ारे मुबारक
इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ

مزارِ مبارک
امام ابنِ حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ

نعمت زائل ہونے کا سبب

ارشادِ امام ابنِ حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ:

”اللہ پاک کی نافرمانیاں اکثر اوقات نعمتیں زائل (یعنی کم یا ختم) ہونے کا سبب بنتی ہیں۔“

حاجی محمد علی (رکنِ شوریٰ) کی خدمت میں تحریری سوغات

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علی محمد

नेमत ज़ाइल होने का सबब

इरशादे इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ : “अल्लाह पाक की ना फ़रमानियां अक्सर अवक़ात नेमतें ज़ाइल (यानी कम या ख़त्म) होने का सबब बनती हैं।” (فتح الباری، 12/257)

ह़ाजी मुह़म्मद अ़ली (रुक्ने शूरा) की ख़िदमत में तह़रीरी सौग़ात

THE REASON FOR THE LOSS OF A BLESSING

Imam Ibn Ḥajar ʿAsqalānī رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه said: “Disobedience to Allah often causes blessings to be removed (i.e. to decrease or end).”[1]

(A written gift for Haji Muhammad Ali, member of Shura)

[1] Fath-ul-Bari, vol.12, p. 257

یادِ سفرِ مدینہ
امارات تا جدہ شریف
دورانِ پرواز کی تحریر

دل کیلئے زیادہ فائدہ مند شے

حضرت محمد بن یونس رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:
''میں نے صالحین (یعنی نیک بندوں) کے
ذکرِ خیر سے زیادہ فائدہ مند
کوئی چیز دل کے لئے
نہ دیکھی۔''

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علیٰ محمد

عبدالوہاب عطاری (رکنِ شوریٰ) کیلئے تحریری سوغات

दिल के लिये ज़ियादा फ़ायदेमन्द शै

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन यूनुस رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने सालिह़ीन (यानी नेक बन्दों) के ज़िक्रे ख़ैर से ज़ियादा फ़ायदेमन्द कोई चीज़ दिल के लिये न देखी।" (صفۃ الصفوۃ، 1/20)

अ़ब्दुल वह्हाब अ़त्तारी (रुक्ने शूरा) के लिये तह़रीरी सौग़ात

THE MOST BENEFICIAL THING FOR THE HEART

Sayyidunā Muḥammad b. Yūnus رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه said: "I have not seen anything more beneficial for the heart than speaking well of the righteous."[1]

(A written gift for Abdul Wahab Attari, member of Shura)

[1] Sifat-us-Safwah, vol. 1, p. 20

اے آنکھ! خون رو لے

افسوس! چند گھڑیاں طیبہ کی رہ گئی ہیں
اے آنکھ! خون رو لے تو رونا ہے جس قدر

یہ لکھتے ہوئے تقریباً ساڑھے چار گھنٹے بعد
(بقیع میں جگہ نہ ملنے کی صورت میں)
شاید مدینہ چھوٹ جائے گا۔ آہ!

(الحاج سید ابراہیم
شاہ صاحب کی نذر...

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علیٰ محمد

ऐ आंख ! ख़ून रो ले

अफ़सोस ! चन्द घड़ियां त़ैबा की रह गई हैं

ऐ आंख ! ख़ून रो ले तू रोना है जिस क़दर

(अलह़ाज सय्यिद इब्राहीम शाह साह़िब की नज़्र)

(Presented to Al-Ḥāj Sayyid Ibrahim Shah Sahib)

آہ! فراقِ مدینہ

اللہ پاک کی خفیہ تدبیر
(یعنی چُھپا فیصلہ)

”بعض اعمال لوگ نیکیاں سمجھ کر کرتے رہیں گے
لیکن وہ بروزِ قیامت گناہوں کے پلڑے میں ہوں گے۔“

اللہ پاک ہمیں عِلم و اِخلاص کے ساتھ مقبول عبادت کی سعادت بخشے۔ اٰمین۔

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہُ علیٰ محمّد

کاش! گنبدِ خضرا دیکھنے کو مل جا

(رکنِ شوریٰ حاجی عقیل مَدَنی کی خدمت میں سوغات)

अल्लाह पाक की ख़ुफ़िया तदबीर (यानी छुपा फ़ैसला)

“बाज़ आमाल लोग नेकियां समझ कर करते रहेंगे लेकिन वोह बरोज़े क़ियामत गुनाहों के पलड़े में होंगे।” (احیاء العلوم، 1/170)

अल्लाह पाक हमें इल्म व इख़्लास के साथ मक़्बूल इबादत की सआदत बख़्शे। आमीन

(रुक्ने शूरा हाजी अक़ील मदनी की ख़िदमत में सौग़ात)

THE HIDDEN PLAN OF ALLAH ALMIGHTY
(Concealed Decree)

“People will continue to perform some actions thinking they are good deeds, but on the Day of Judgement, they will be placed on the scale of sins.”[1]

May Allah Almighty grant us the privilege of performing accepted acts of worship with knowledge and sincerity. Ameen.

(A gift for Shura member Haji Aqeel Madani)

[1] Ihya-ul-Uloom , vol. 1, p. 170

مٹّی کے برتن

حدیث میں ہے: "جو اپنے گھر کے برتن مٹّی کے رکھے فرشتے اس کی زیارت کریں۔"

منقول ہے کہ مٹّی کے برتنوں پر کوئی حساب نہیں

(حاجی ابوماجد محمد شاہد مدنی (رکنِ شوریٰ) کی خدمت میں سوغات)

آہ! غمِ مدینہ

آقا! مدینے بلا لیجئے!

मिट्टी के बरतन

हदीस में है : "जो अपने घर के बरतन मिट्टी के रखे फ़रिश्ते उस की ज़ियारत करें।"

(ردّالمحتار، 566/9)

मन्क़ूल है कि मिट्टी के बरतनों पर कोई हिसाब नहीं। (قوت القلوب، 288/1)

(हाजी अबू माजिद मुहम्मद शाहिद मदनी (रुक्ने शूरा) की ख़िदमत में सौग़ात)

CLAY UTENSILS

It is stated in a Hadith:
"The angels visit the one who keeps clay utensils in their home."[1]

It is narrated that there is no accountability for clay utensils.[2]

(A gift for Haji Abu Majid Muhammad Shahid Madani, member of Shura)

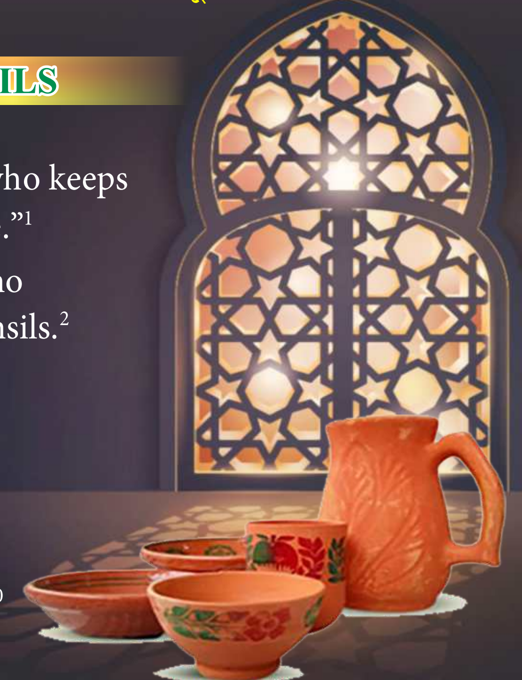

[1] Radd-ul-Muhtar, vol. 9, p. 566
[2] Qut-ul-Quloob, vol. 1, p. 288 citing Fayzan-e-Junayd-e-Baghdadi رحمۃ اللہ علیہ, p. 10

آہ! میں مدینہ چھوڑ آیا

سنّت کی فضیلت

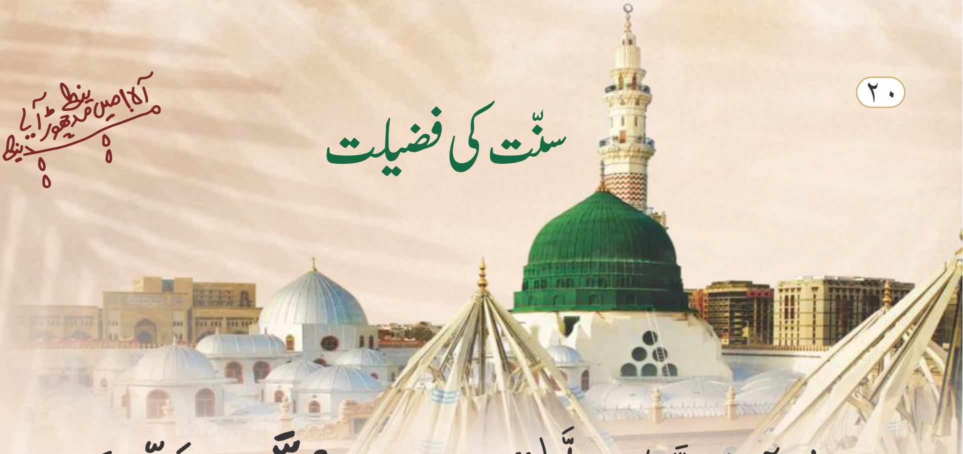

فرمانِ آخری نبی صَلَّی اللہُ علیہ والہٖ وسلَّم "جس نے میری سُنّت سے مَحبّت کی اُس نے مجھ سے مَحبّت کی اور جس نے مجھ سے مَحبّت کی وہ جنّت میں میرے ساتھ ہوگا۔"

اَلفِراق وَالفِراق اے پیارے آقا اَلفِراق
پھر بُلا لو جلد آقائے مدینہ الوداع

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہُ علیٰ محمّد

(رکنِ شوریٰ الحاج سیّد لقمان شاہ صاحب کی خدمت میں تحریری سوغات)

सुन्नत की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।" (مشکاۃ،1/55،حدیث:175)

(रुक्ने शूरा अलह़ाज सय्यिद लुक़्मान शाह साह़िब की ख़िदमत में तह़रीरी सौग़ात)

THE EXCELLENCE OF THE SUNNAH

The final Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم said: "Whoever loves my Sunnah loves me, and whoever loves me will be with me in Paradise."[1]

(A written gift for Shura member Al-Ḥāj Sayyid Luqman Shah Sahib)

[1] Mishkat, vol. 1, p. 55, Hadith 175

مریض کی عیادت کی فضیلت

فرمانِ آخری نبی صلّی اللہ علیہ وسلّم: "جو کسی مریض کی عیادت کو جاتا ہے
تو آسمان سے ایک پکارنے والا پکارتا ہے: تجھے خوشخبری ہو، تیرا چلنا اچھا ہے
اور تو نے جنّت کی ایک منزل کو اپنا ٹھکانہ بنالیا۔"

الحمدللہ الکریم ہماری ٹرین جانبِ مدینہ بڑھتی جارہی ہے اسی دوران
یہ تحریر تیار کی، تحفہ برائے رکنِ شوریٰ حاجی فضیل رضا عطاری
کے مدینے آنے والے ہیں

मरीज़ की इ़यादत की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो किसी मरीज़ की इ़यादत को जाता है तो आस्मान से एक पुकारने वाला पुकारता है : तुझे ख़ुशख़बरी हो, तेरा चलना अच्छा है और तू ने जन्नत की एक मन्ज़िल को अपना ठिकाना बना लिया।" (ابن ماجہ، 2/192، حدیث: 1443)

(तोह़फ़ा बराए रुक्ने शूरा ह़ाजी फ़ुज़ैल रज़ा अ़त्तारी)

THE EXCELLENCE OF VISITING THE SICK

The final Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم said: "Whoever travels to visit a sick person, a caller from the sky calls out: 'Glad tidings to you, your journey is good, and you have made a home for yourself in Paradise.'"[1]

(A gift for Shura member Haji Fuzail Raza Attari)

[1] Ibn Maja, vol. 2, p. 192, Hadith 1443

نماز کی اہمیت

حضور خواجہ غریب نواز رحمۃ اللہ علیہ
نے ایک بار روتے ہوئے فرمایا:
"نماز دین کا ستون ہے،
جب تک ستون سلامت ہے
گھر سلامت ہے،
جب ستون گرے گا تو گھر بھی گر جائے گا۔"

صلوا علی الحبیب　　صلی اللہ علی محمد

(رکنِ شوریٰ الحاج الحافظ محمد اسد مدنی سلمہُ الغنی کی خدمت میں تحریری سوغات----)

नमाज़ की अहमियत

हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने एक बार रोते हुए फ़रमाया : “नमाज़ दीन का सुतून है, जब तक सुतून सलामत है घर सलामत है, जब सुतून गिरेगा तो घर भी गिर जाएगा।” (फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़, स. 7)

(रुक्ने शूरा अलहाज अल हाफ़िज़ मुहम्मद असद मदनी سلّمہ الغنی की ख़िदमत में तहरीरी सौग़ात)

THE IMPORTANCE OF PRAYER

Khwāja Gharīb Nawāz رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه said while crying: “Prayer is the pillar of religion. As long as the pillar remains sound, the house is sound. When the pillar falls, the house will also fall.”[1]

(A written gift for Shura member Al-Ḥāj Al-Ḥāfiẓ Muhammad Asad Madani)

[1] Faizan-e-Ghareeb Nawaz, p. 7

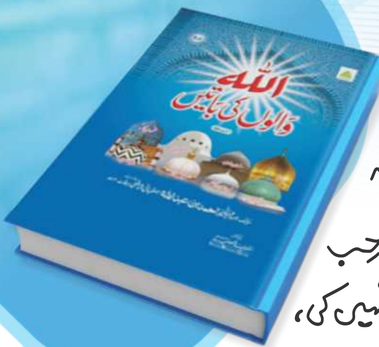

خاموش رہنے والے بزرگ

حضرت سیدنا محمد بن نضر حارثی رحمۃ اللہ علیہ کے ساتھ عبّادان سے کوفہ سفر کرنے والے ایک صاحب کا بیان ہے کہ راستے بھر حضرت نے ایک بھی بات نہیں کی، جب انہیں کوئی کام پڑتا تو اپنے بیٹے کی طرف دیکھتے تو وہ اٹھ کر کام کر دیتا۔

حضرت محمد بن نضر حارثی رحمۃ اللہ علیہ بہت زیادہ **خاموش** رہنے والے بزرگ تھے، فرماتے ہیں: علم کی ابتدا **خاموشی** ہے، پھر غور سے سننا ہے، پھر اسے یاد رکھنا ہے، پھر اس پر عمل کرنا اور پھر اسے پھیلانا۔

صلوا علی الحبیب
صلی اللہ علی محمد

(رکنِ شوریٰ حاجی اظہر عطاری کی خدمت میں سوغات)

ख़ामोश रहने वाले बुज़ुर्ग

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नज़्र हारिसी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ के साथ अ़ब्बादान से कूफ़ा सफ़र करने वाले एक साहिब का बयान है कि रास्ते भर हज़रत ने एक भी बात नहीं की, जब उन्हें कोई काम पड़ता तो अपने बेटे की तरफ़ देखते तो वोह उठ कर काम कर देता। (حلیۃ الاولیاء، 8/240، قول نمبر:12022)

हज़रते मुहम्मद बिन नज़्र हारिसी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ बहुत ज़ियादा ख़ामोश रहने वाले बुज़ुर्ग थे, फ़रमाते हैं : इ़ल्म की इब्तिदा ख़ामोशी है, फिर ग़ौर से सुनना है, फिर उसे याद रखना है, फिर उस पर अ़मल करना और फिर उसे फैलाना।

(حلیۃ الاولیاء، 8/239، قول نمبر:12014)

(रुक्ने शूरा हाजी अज़हर अ़त्तारी की ख़िदमत में सौग़ात)

THE SILENT PIOUS PREDECESSOR

A person who travelled from Abbadan to Kufa with Sayyidunā Muḥammad b. Naḍr Ḥārithī رَحۡمَةُاللّٰہِعَلَیۡه narrates that the Shaykh did not say a single word throughout the journey. Whenever he needed something, he would look at his son, who would stand up and fulfil the task.[1]

Sayyidunā Muḥammad b. Naḍr Ḥārithī رَحۡمَةُاللّٰہِعَلَیۡه was a pious predecessor who would remain silent. He said: "Knowledge begins with silence, then listening carefully, then remembering it, then acting upon it, and then spreading it."[2]

(A gift for Shura member Haji Azhar Attari)

---

[1] Hilyat al-Awliya`, vol. 8, p. 240, Number: 12022

[2] Hilyat al-Awliya`, vol. 8, p. 239, Number: 12014

مختصر گفتگو

فرمانِ مولیٰ علی رضی اللہ عنہ: خَیْرُ الْکَلَامِ مَا قَلَّ وَدَلَّ۔

یعنی: اچھی بات وہ ہے جو مختصر ہو اور جامع (یعنی پوری) ہو۔

(رکنِ شوریٰ حاجی جُنید مدنی سلّمہ الغنی کی خدمت میں تحریری سوغات)

صلّوا علی الحبیب صلّی اللہ علیٰ محمّد

سنو جو میرے دکھڑے میں سناواں یا رسول اللہ ﷺ
جے آکھو تے مدینے میں وی آواں یا رسول اللہ ﷺ
(صلّی اللہ علیہ والہ وسلم)

मुख़्तसर गुफ़्तगू

फ़रमाने मौला अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہُ : خَیْرُ الْکَلَامِ مَا قَلَّ وَدَلَّ यानी : अच्छी बात वोह है जो मुख़्तसर हो और जामेअ़ (यानी पूरी) हो। (التعلیقۃ للقاضی حسین (علی مختصر المزنی)، 1/148)

(रुक्ने शूरा ह़ाजी जुनैद मदनी سلّمہ الغنی की ख़िदमत में तह़रीरी सौग़ात)

SHORT CONVERSATION

Sayyidunā ʿAlī b. Abī Ṭālib رَضِیَ اللہُ عَنْہُ said: "خَیْرُ الْکَلَامِ مَا قَلَّ وَدَلَّ" The best speech is that which is brief and comprehensive.[1]

(A written gift for Shura member Haji Junaid Madani)

[1] Al-Taliqah lil Qadi Husayn, vol. 1, p. 148

مدینے کی سختی پر صبر کی فضیلت

یادِ مدینہ
تحریرِ مدینہ

ایک فرمانِ آخری نبی صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم میں یہ بھی ہے: "جس نے مدینہ کی تنگدستی اور سختی پر صبر کیا میں قیامت میں اُس کی شفاعت کروں گا یا اُس کے حق میں گواہی دوں گا۔"

رُکنِ شوریٰ حاجی محمد فاروق جیلانی کی خدمت میں سوغات۔

صلّوا علی الحبیب
صلی اللہ علیٰ محمد

واہ! کیا بات ہے مدینے کی

मदीने की सख़्ती पर सब्र की फ़ज़ीलत

एक फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में येह भी है : "जिस ने मदीने की तंगदस्ती और सख़्ती पर सब्र किया मैं क़ियामत में उस की शफ़ाअत करूंगा या उस के हक़ में गवाही दूंगा।" (مجمع الزوائد، 3/657، حدیث:5819)

रुक्ने शूरा हाजी मुहम्मद फ़ारूक़ जीलानी की ख़िदमत में सौग़ात

THE EXCELLENCE OF SHOWING PATIENCE OVER THE HARDSHIPS OF MADINAH

The final Prophet صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم said: "Whoever remains patient through the poverty and hardship of Madinah, I will intercede for him or testify in his favour on the Day of Judgement."[1]

(A gift for Shura member Haji Muhammad Farooq Jilani)

[1] Majma-uz-Zawaid, vol. 3, p. 657, Hadith 5819

مکّے کی گرمی کی فضیلت

فرمانِ آخری نبی صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم:
"جو شخص دن کے کچھ وقت مکّے کی گرمی پر صبر کرے
جہنّم کی آگ اُس سے دُور ہو جاتی ہے۔"

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہُ علیٰ محمّد

(رکنِ شوریٰ حاجی بغداد رضا کیلئے سوغات)

(الحمد للہ الکریم مکۂ پاک سے مدینۂ پاک ہماری گاڑی رواں دواں ہے)

मक्के की गर्मी की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स दिन के कुछ वक़्त मक्के की गर्मी पर सब्र करे जहन्नम की आग उस से दूर हो जाती है।" (اخبار مکۃ للفاکھی، 2/310، حدیث:1565)

(रुक्ने शूरा हाजी बग़दाद रज़ा के लिये सौग़ात)

THE VIRTUE OF MAKKAH'S HEAT

The final Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم said: "Whoever patiently endures the heat of Makkah for some part of the day, the fire of Hell is kept away from him."[1]

(A gift for Shura member Haji Baghdad Raza)

[1] Akhbar-e-Makkah li al-Fakihi, vol. 2, p. 310, Hadith 1565

سب سے زیادہ مہربان

فرمانِ آخری نبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم "میری اُمّت کیلئے سب سے زیادہ مہربان ابوبکر صدّیق ہیں۔"

ہمدم و غمخوار کون؟ حضرتِ صدّیق ہیں
حامیٔ عطّار کون؟ حضرتِ صدّیق ہیں۔

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علی محمّد

(حاجی منصور عطاری کی خدمت میں سوغات)

सब से ज़ियादा मेहरबान

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "मेरी उम्मत के लिये सब से ज़ियादा मेहरबान अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللہُ عَنْہ) हैं।" (ترمذی، 5/435، حدیث:3815)

(हाजी मन्सूर अ़त्तारी की ख़िदमत में सौग़ात)

THE MOST KIND

The final Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم said: "Abū Bakr al-Ṣiddīq (رَضِیَ اللہُ عَنْہُ) is the kindest to my Ummah."[1]

(A gift for Haji Mansoor Attari)

[1] Tirmidhi, vol. 5, p. 435, Hadith 3815

آہ! فراقِ مدینہ

ہائے! مدینہ میں چھوڑ آیا

حافظہ مضبوط اور نظر تیز ہو

گاجر کے موسم میں روزانہ ایک گاجر کھا لینے سے حافِظہ مضبوط ہوتا اور نظر تیز ہوتی ہے یہاں تک کہ اگر عینک پہنتے ہیں تو نمبرز کم ہونا شروع ہو جائیں گے۔ (ان شاء اللہُ الکریم) (گاجر دھو کر بغیر چھیلے کھائیے چھیلنے سے اِس کے نیچے موجود وِٹامن سی ضائع ہو سکتا ہے)

(رکنِ شوریٰ حاجی برکت علی عطاری کی خدمت میں سوغات)

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہُ علیٰ محمّد

الٰہی! موت آئے گنبدِ خضرا کے سائے میں
مدینے میں جنازہ دھوم سے عطارؔ کا نکلے

ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ और नज़र तेज़ हो

गाजर के मौसम में रोज़ाना एक गाजर खा लेने से ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ होता और नज़र तेज़ होती है यहां तक कि अगर ऐनक पहनते हैं तो नम्बर्ज़ कम होना शुरूअ़ हो जाएंगे। (اِن شاءَ اللہُ الکریم) (गाजर धो कर बग़ैर छीले खाइये छीलने से इस के नीचे मौजूद विटामिन सी ज़ाएअ़ हो सकता है)

(रुक्ने शूरा ह़ाजी बरकत अ़ली अ़त्तारी की ख़िदमत में सौग़ात)

STRENGTHENING MEMORY AND SHARPENING VISION

During the carrot season, eating one carrot daily strengthens memory and sharpens eyesight, to the extent that if someone wears glasses, the lens number will begin to decrease (اِن شاءَ اللہُ الکریم). (Eat the carrot after washing it and without peeling it, as peeling may remove the vitamin C beneath the skin.)

(A gift for Shura member Haji Barkat Ali Attari)

دعا کی قبولیت کا ایک مقام

اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"خواجہ غریب نواز رحمۃ اللہ علیہ کے مزار شریف پر دعا قبول ہوتی ہے۔"

(رکنِ شوریٰ حاجی خالد عطاری (U.K) کی خدمت میں سوغات)

صلّوا علی الحبیب
صلّی اللہ علیٰ محمّد

दुआ की क़बूलिय्यत का एक मक़ाम

आला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : "ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِعَلَيْه के मज़ार शरीफ़ पर दुआ क़बूल होती है।" (फ़ज़ाइले दुआ, स. 138 मुलख़्ख़सन)

(रुक्ने शूरा ह़ाजी ख़ालिद अ़त्तारी (U.K) की ख़िदमत में सौग़ात)

A PLACE WHERE PRAYERS ARE ACCEPTED

Imam Aḥmad Razā Khān رَحْمَةُاللهِعَلَيْه said: "Supplications are accepted at the shrine of Khwāja Gharīb Nawāz رَحْمَةُاللهِعَلَيْه."[1]

(A gift for Shura member Haji Khalid Attari (U.K.))

[1] Faza`il-e-Du'a, p. 138 summarised

جنّت میں نہیں جائے گا

فرمانِ مصطفےٰ صلَّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم :
”دھوکا دینے والا جنّت میں داخل نہیں ہوگا۔“
یعنی دھوکے کا عذاب چکھ لینے کے بعد داخلِ جنّت ہوگا۔

عبدالمبین عطاری (بنگلہ دیش)
کی خدمت میں سوغات۔

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب
صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत में नहीं जाएगा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : “धोका देने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।” (ترمذی، 3/388، حدیث:1970)

यानी धोके का अ़ज़ाब चख लेने के बाद दाख़िले जन्नत होगा।

अ़ब्दुल मुबीन अ़त्तारी (बांग्लादेश) की ख़िदमत में सौग़ात)

WILL NOT ENTER PARADISE

The holy Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم said: “A person who deceives will not enter Paradise.”[1] This means that such a person will only enter Paradise after facing the punishment for deception.

(A gift for Abdul Mubeen Attari (Bangladesh))

[1] Tirmidhi, vol. 3, p. 388, Hadith 1970

دعا کے وقت دل کی نرمی کی اہمیت

दुआ के वक़्त दिल की नर्मी की अहमियत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم : "रिक़्क़ते क़ल्ब (यानी दिल की नर्मी और रोने वग़ैरा) के वक़्त दुआ को ग़नीमत जानो।" (كنزالعمال، الجزء الثانی، 1/48، حديث:3367)

उम्मे रबीअ़ अ़त्तारिया के लिये सौग़ात

THE IMPORTANCE OF SOFTNESS OF THE HEART AT THE TIME OF DU'A

The Holy Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم has stated: "Consider Du'a a great opportunity at the time of softness of the heart (meaning tenderness of the heart and weeping etc.)."[1]

A gift for Umm-e-Rabi' Attariyyah

[1] Kanz-ul-Ummal, Al-Juz-us-Sani, 1/48, Hadith: 3367

بی بی فاطمہ رضی اللہ عنہا سے جنّت کی خوشبو آتی تھی

سیّدہ خاتونِ جنّت حضرت بی بی فاطِمہ زَہرا رضی اللہ عنہا کے مبارک بدن سے جنّت کی خوشبو آتی تھی جسے حُضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سُونگھا کرتے تھے، اِس لئے آپ کا لقب "زَہرا" ہوا۔

اُمِّ قُربان عطاریہ (رابطہ برائے شخصیات) کی خدمت میں سوغات ....

बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से जन्नत की ख़ुश्बू आती थी

सय्यिदा ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के मुबारक बदन से जन्नत की ख़ुश्बू आती थी जिसे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सूंघा करते थे, इस लिये आप का लक़ब "ज़हरा" हुवा। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/453)

उम्मे क़ुरबान अ़त्तारिया (राबिता बराए शख़्सियात) की ख़िदमत में सौग़ात....

THE FRAGRANCE OF PARADISE USED TO COME FROM BIBI FATIMA رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا

The fragrance of Paradise used to come from the blessed body of the Leader of the Women of Paradise, Sayyidatuna Bibi Fatima-tuz-Zahra رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا, which the Holy Prophet صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم used to smell; for this reason, her title became "Zahra".[1]

A gift for Umm-e-Qurban Attariyyah (Department for Contacting Personalities)...

[1] Mirat-ul-Manajih, 8/453

مُنافقت سے پاک دل

فرمانِ مصطفٰے صلّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم: "محمّد (صلّی اللّٰہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم) پر جو درودِ پاک پڑھے اُس کا دل مُنافَقت سے ایسا پاک ہو جائے گا جیسے کپڑا پانی سے پاک ہو جاتا ہے۔"

اُمِّ صَفا عطّاریہ (حج و عُمرہ وغیرہ) کی خدمت میں سوغات۔

मुनाफ़क़त से पाक दिल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर जो दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल मुनाफ़क़त से ऐसा पाक हो जाएगा जैसे कपड़ा पानी से पाक हो जाता है।" (القول البدیع، ص277)

उम्मे सफ़ा अ़त्तारिया (ह़ज व उ़मरा वग़ैरा) की ख़िदमत में सौग़ात।

A HEART FREE FROM HYPOCRISY

The Final Prophet صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم has stated: "Whoever recites Durood upon Muhammad (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم), his heart will become as pure from hypocrisy as a cloth becomes clean with water."[1]

A gift for Umm-e-Safa Attariyyah (Hajj and Umrah etc.)

[1] Al-Qaul-ul-Badee, p. 277

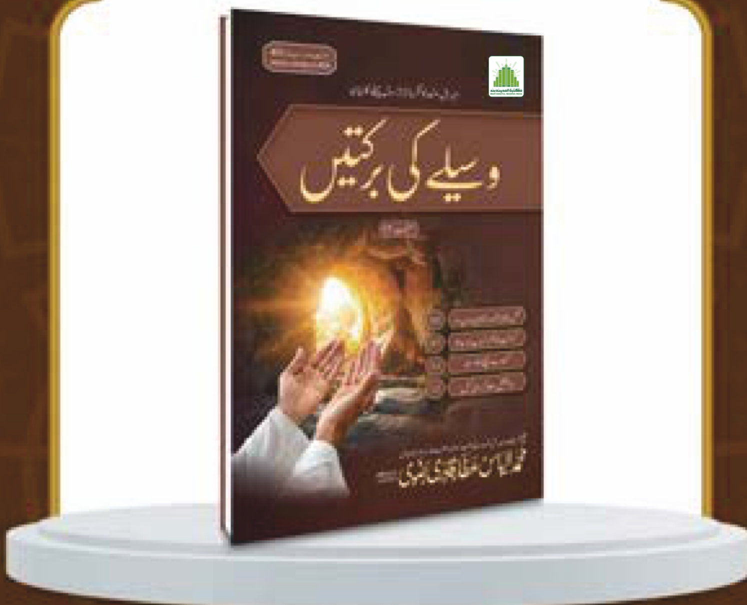

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025